# ‘नमक का दरोगा’ (मुंशी प्रेमचंद)

1. ‘नमक का दरोगा’ कहानी किस युग की रचना है?

   A. भक्तिकाल

   B. छायावाद

   C. यथार्थवाद

   D. रीतिकाल

   **उत्तर:** C

2. वंशीधर के पिता ने उन्हें क्या सीख दी?

   A. केवल वेतन पर निर्भर रहो

   B. ऊपरी आय पर ध्यान दो

   C. व्यापार करो

   D. खेती करो

   **उत्तर:** B

3. वंशीधर ने अलोपीदीन को कहाँ पकड़ा?

   A. बाजार में

   B. अदालत में

   C. घाट पर

   D. घर पर

   **उत्तर:** C

SOLANKI SIR ACADEMY

4. अलोपीदीन ने अधिकतम कितनी रिश्वत की पेशकश की?

A. 5 हजार

B. 10 हजार

C. 20 हजार

D. 40 हजार

**उत्तर:** D

5. अदालत ने अलोपीदीन को क्यों छोड़ दिया?

A. वे निर्दोष थे

B. गवाह नहीं थे

C. धन और प्रभाव के कारण

D. वंशीधर अनुपस्थित थे

**उत्तर:** C

6. वंशीधर को किस कारण नौकरी से हटाया गया?

A. रिश्वत लेने पर

B. कठोरता और विचारहीनता

C. आलस्य

D. बीमारी

**उत्तर:** B

SOLANKI SIR ACADEMY

7. अलोपीदीन ने अंत में क्या किया?

A. बदला लिया

B. माफी माँगी

C. वंशीधर को मैनेजर बनाया

D. विदेश चले गए

**उत्तर:** C

8. कहानी में 'धर्म' का प्रतीक कौन है?

A. पिता

B. वंशीधर

C. अलोपीदीन

D. वकील

**उत्तर:** B

9. कहानी का केंद्रीय संघर्ष है -

A. पिता-पुत्र

B. धन बनाम धर्म

C. अदालत बनाम पुलिस

D. जमींदार बनाम किसान

**उत्तर:** B

SOLANKI SIR ACADEMY

10. कहानी का मुख्य संदेश है -

A. धन सर्वोपरि है

B. रिश्वत लेना ठीक है

C. ईमानदारी अंततः सम्मान दिलाती है

D. न्याय हमेशा जीतता है

**उत्तर:** C

---

## 10 एक पंक्ति प्रश्न-उत्तर

1. वंशीधर किस विभाग में नियुक्त हुए थे?

**उत्तर :-** नमक विभाग में।

2. अलोपीदीन कौन थे?

**उत्तर :-** धनी और प्रभावशाली जमींदार।

3. वंशीधर ने रिश्वत क्यों नहीं ली?

**उत्तर :-** अपने धर्म और कर्तव्य के कारण।

4. अदालत का निर्णय किसके पक्ष में गया?

**उत्तर :-** पंडित अलोपीदीन के पक्ष में।

5. वंशीधर के पिता ऊपरी आय को क्या मानते थे?

**उत्तर :-** बहता हुआ स्रोत।

6. कहानी का प्रकाशन कब हुआ?

**उत्तर :-** 1914 ई.

SOLANKI SIR ACADEMY

7. वंशीधर का प्रमुख गुण क्या था?

**उत्तर :-** ईमानदारी।

8. अलोपीदीन ने अंत में क्या स्वीकार किया?

**उत्तर :-** वंशीधर की नैतिक श्रेष्ठता।

9. कहानी में समाज की कौन-सी बुराई दिखाई गई है?

**उत्तर :-** भ्रष्टाचार।

10. कहानी का अंत किस भावना से होता है?

**उत्तर :-** सत्य और धर्म की विजय से।

---

## 10 तीन पंक्ति प्रश्न-उत्तर

1.वंशीधर के पिता की मानसिकता स्पष्ट कीजिए।

वे जीवन को व्यावहारिक दृष्टि से देखते थे। उनका मानना था कि वेतन पर्याप्त नहीं होता इसलिए उन्होंने ऊपरी आय को आवश्यक बताया।

2.वंशीधर का चरित्र कैसा था?

वे कर्तव्यनिष्ठ और दृढ़ थे। रिश्वत के प्रलोभन से नहीं डिगे। उन्होंने धर्म को धन से ऊपर रखा।

3.अलोपीदीन का प्रारंभिक व्यवहार कैसा था?

वे धन के बल पर सब कुछ खरीदना चाहते थे। उन्होंने वंशीधर को बार-बार रिश्वत दी। उन्हें अपने प्रभाव पर घमंड था।

SOLANKI SIR ACADEMY

4.अदालत का वातावरण कैसा था?

अदालत का वातावरण पक्षपातपूर्ण था। धन का प्रभाव स्पष्ट था। न्याय कमजोर पड़ गया।

5.जनता की प्रतिक्रिया क्या थी?

लोग तमाशा देखने आए थे। वे धनवान के प्रति सहानुभूति रखते थे। समाज का दोहरा चरित्र उजागर हुआ।

6.धन और धर्म का संघर्ष कैसे दिखाया गया है?

अलोपीदीन धन का प्रतीक हैं। वंशीधर धर्म का प्रतीक हैं। अंत में धर्म नैतिक रूप से विजयी होता है।

7.वंशीधर को नौकरी से हटाए जाने का कारण क्या था?

उन्हें कठोर और विचारहीन कहा गया। उन्होंने उच्च वर्ग को चुनौती दी थी।

उनका ईमानदार व्यवहार अधिकारियों को असुविधाजनक लगा।

8.कहानी का शीर्षक सार्थक क्यों है?

कहानी का केंद्र वंशीधर हैं। वे नमक विभाग के दरोगा थे।

उनका चरित्र कहानी की आत्मा है।

9.अलोपीदीन का हृदय परिवर्तन क्यों हुआ?

वे उनकी ईमानदारी से प्रभावित हुए। उन्होंने वंशीधर की दृढ़ता देखी। धन से सब कुछ न खरीद पाने का अनुभव हुआ।

10.कहानी का सामाजिक संदेश क्या है?

समाज में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सच्चाई कठिनाइयों का सामना करती है। अंततः ईमानदारी सम्मान दिलाती है।

SOLANKI SIR ACADEMY

# 10 दीर्घ प्रश्न

**1. 'नमक का दरोगा' कहानी का विस्तृत सारांश लिखिए।**

**उत्तर:**

'नमक का दरोगा' प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानी है। इसमें वंशीधर नामक युवक की कथा है, जो नमक विभाग में दरोगा नियुक्त होता है। उसके पिता उसे ऊपरी आय अर्जित करने की सलाह देते हैं। एक दिन वह पंडित अलोपीदीन को नमक की तस्करी करते हुए पकड़ लेता है। अलोपीदीन धनबल से उसे प्रभावित करना चाहते हैं और बड़ी-बड़ी रकम की रिश्वत देते हैं, परंतु वंशीधर धर्म और कर्तव्य से नहीं डिगते। अदालत में धन के प्रभाव से अलोपीदीन निर्दोष सिद्ध हो जाते हैं और वंशीधर को कठोरता के आरोप में नौकरी से हटा दिया जाता है। अंततः अलोपीदीन उनकी ईमानदारी से प्रभावित होकर उन्हें अपनी संपत्ति का स्थायी मैनेजर नियुक्त कर देते हैं।

---

**2. वंशीधर का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

वंशीधर युवा, आदर्शवादी और कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी थे। वे अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे। रिश्वत के अनेक प्रस्तावों के बावजूद उन्होंने ईमानदारी नहीं छोड़ी। वे आत्मसम्मानी और निर्भीक थे। समाज और अदालत ने उनका साथ नहीं दिया, फिर भी वे सत्य के मार्ग से नहीं हटे। अंततः उनकी नैतिक विजय हुई।

---

**3. पंडित अलोपीदीन का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

अलोपीदीन धनी, प्रभावशाली और व्यवहारकुशल जमींदार थे। वे धन के बल पर सब कुछ खरीदने के अभ्यस्त थे। प्रारंभ में उन्होंने रिश्वत देकर बचने की कोशिश की। अदालत में अपने प्रभाव से वे छूट गए। परंतु वंशीधर की ईमानदारी से प्रभावित होकर उनका हृदय परिवर्तन हुआ।

SOLANKI SIR ACADEMY

---

**4. कहानी में धन और धर्म के संघर्ष को स्पष्ट कीजिए।**

'नमक का दरोगा' में धन और धर्म का संघर्ष कहानी का केंद्रीय तत्व है। पंडित अलोपीदीन धन और प्रभाव का प्रतीक हैं, जबकि वंशीधर धर्म, सत्य और कर्तव्यनिष्ठा के प्रतीक हैं। जब वंशीधर अलोपीदीन को नमक की तस्करी करते हुए पकड़ते हैं, तब अलोपीदीन बार-बार धन का प्रलोभन देकर उन्हें कर्तव्य से हटाना चाहते हैं। वे एक हजार से लेकर चालीस हजार तक रिश्वत देने को तैयार हो जाते हैं। परंतु वंशीधर अपने सिद्धांतों से नहीं डिगते। अदालत में धन की जीत दिखाई देती है,

क्योंकि अलोपीदीन प्रभाव के कारण छूट जाते हैं। फिर भी नैतिक स्तर पर धर्म की विजय होती है, क्योंकि अंततः अलोपीदीन स्वयं वंशीधर की ईमानदारी के सामने झुकते हैं। इस प्रकार कहानी दर्शाती है कि भौतिक रूप से धन शक्तिशाली हो सकता है, पर नैतिक रूप से धर्म श्रेष्ठ है।

---

**5. कहानी का शीर्षक 'नमक का दरोगा' क्यों उपयुक्त है?**

कहानी का शीर्षक अत्यंत सार्थक और उपयुक्त है। पूरी कथा का केंद्र वंशीधर हैं, जो नमक विभाग में दरोगा के पद पर नियुक्त होते हैं। नमक उस समय सरकारी नियंत्रण में था और उसकी तस्करी अपराध मानी जाती थी। वंशीधर का कर्तव्य था कि वे नमक की अवैध ढुलाई रोकें। कहानी में उनका पद ही उनके चरित्र की परीक्षा का माध्यम बनता है। यदि वे दरोगा न होते तो धन और धर्म का यह संघर्ष उत्पन्न न होता। शीर्षक संक्षिप्त होते हुए भी कथा की आत्मा को व्यक्त करता है। यह केवल पद का उल्लेख नहीं करता, बल्कि उस पद पर आसीन व्यक्ति की ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता को भी दर्शाता है। इसलिए 'नमक का दरोगा' शीर्षक पूरी तरह सार्थक है।

---

SOLANKI SIR ACADEMY

**6. कहानी में सामाजिक यथार्थ का चित्रण कीजिए।**

प्रेमचंद ने इस कहानी में तत्कालीन समाज की वास्तविक स्थिति का सजीव चित्रण किया है। समाज में भ्रष्टाचार, धन का प्रभाव और न्याय व्यवस्था की कमजोरी स्पष्ट दिखाई देती है। वंशीधर के पिता का ऊपरी आय को आवश्यक बताना उस समय की मानसिकता को दर्शाता है। अदालत में धनवान का पक्ष मजबूत होना और गरीब या ईमानदार व्यक्ति का उपेक्षित रह जाना सामाजिक विडंबना को उजागर करता है। जनता का व्यवहार भी दोहरा है—वे सच्चाई का समर्थन नहीं करते, बल्कि प्रभावशाली व्यक्ति के पक्ष में खड़े रहते हैं। कहानी यह भी दिखाती है कि समाज में नैतिकता का स्थान कमजोर हो चुका था। इस प्रकार प्रेमचंद ने यथार्थवादी दृष्टिकोण से समाज की कमियों को उजागर किया है।

---

**7. वंशीधर और उनके पिता के विचारों की तुलना कीजिए।**

वंशीधर और उनके पिता के विचारों में स्पष्ट अंतर है। पिता जीवन को व्यावहारिक दृष्टि से देखते हैं और मानते हैं कि केवल वेतन से गुज़ारा नहीं हो सकता। वे ऊपरी आय को आवश्यक बताते हैं और इसे सामान्य बात मानते हैं। दूसरी ओर, वंशीधर आदर्शवादी और सिद्धांतनिष्ठ हैं। वे अपने कर्तव्य और धर्म को सर्वोपरि मानते हैं। पिता अनुभव के आधार पर समझौते की सलाह देते हैं, जबकि पुत्र सत्य के मार्ग पर अडिग रहता है। पिता के लिए जीवन की सुविधा महत्वपूर्ण है, परंतु वंशीधर के लिए आत्मसम्मान और ईमानदारी अधिक महत्वपूर्ण है। यह तुलना पुरानी

SOLANKI SIR ACADEMY

और नई सोच के संघर्ष को भी दर्शाती है। अंततः वंशीधर की नैतिक श्रेष्ठता सिद्ध होती है।

---

**8. अदालत के दृश्य का विश्लेषण कीजिए।**

अदालत का दृश्य कहानी का महत्वपूर्ण भाग है। यहाँ न्याय व्यवस्था की वास्तविक स्थिति सामने आती है। वंशीधर ने अपना कर्तव्य निभाया था, परंतु अदालत में पंडित अलोपीदीन के धन और प्रभाव के कारण फैसला उनके पक्ष में जाता है। गवाह डगमगा जाते हैं और न्यायाधीश भी प्रभाव में दिखाई देते हैं। निर्णय में वंशीधर को कठोर और विचारहीन कहा जाता है। यह दृश्य दिखाता है कि न्याय व्यवस्था निष्पक्ष नहीं रही थी। समाज में धन का प्रभाव इतना प्रबल था कि सत्य कमजोर पड़ गया। प्रेमचंद ने इस दृश्य के माध्यम से उस समय की न्याय प्रणाली की कमियों को उजागर किया है।

SOLANKI SIR ACADEMY

---

**9. कहानी के अंत का महत्व स्पष्ट कीजिए।**

कहानी का अंत अत्यंत प्रभावशाली है। अदालत में भले ही वंशीधर हार जाते हैं, पर नैतिक रूप से वे विजयी होते हैं। पंडित अलोपीदीन उनकी ईमानदारी से प्रभावित होकर उन्हें अपनी संपत्ति का स्थायी मैनेजर नियुक्त करते हैं। यह घटना दर्शाती है कि सच्चाई अंततः सम्मान दिलाती है। कहानी का अंत निराशाजनक नहीं, बल्कि प्रेरणादायक है। यह पाठक को विश्वास दिलाता है कि ईमानदारी व्यर्थ नहीं जाती। प्रेमचंद ने

अंत में आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किया है, जिससे पाठकों में नैतिकता के प्रति आस्था बनी रहती है।

---

**10. प्रेमचंद की भाषा-शैली की विशेषताएँ बताइए।**

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और प्रभावपूर्ण है। उन्होंने बोलचाल की हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है। कहानी में मुहावरों और लोकोक्तियों का सुंदर उपयोग हुआ है, जिससे भाषा सजीव बनती है। संवाद शैली स्वाभाविक और चरित्रानुकूल है। वर्णनात्मक शैली के माध्यम से उन्होंने वातावरण का यथार्थ चित्रण किया है। व्यंग्य और करुणा दोनों का संतुलित प्रयोग मिलता है। भाषा में नाटकीयता भी है, विशेषकर रिश्वत और अदालत के प्रसंग में। उनकी शैली पाठक को सीधे कहानी से जोड़ देती है। इस प्रकार प्रेमचंद की भाषा-शैली कहानी को प्रभावशाली और जीवंत बनाती है।

SOLANKI SIR
ACADEMY